

## 1. ICC ने मई माह के लिए प्लेयर ऑफ द मंथ अवॉर्ड की घोषणा



- 14 जून, 2021 को अंतर्राष्ट्रीय किक्रेट परिषद् (ICC) ने मई माह के लिए प्लेयर ऑफ द मंथ अवॉर्ड के विजेताओं के नामों की घोषणा कर दी है। बांग्लादेश के स्टार प्लेयर मुशफिकुर रहीम ने मई माह के लिए प्लेयर ऑफ द मंथ का अवॉर्ड जीतकर कारनामा कर दिया है। बांग्लादेश के लिए यह अवॉर्ड जीतने वाले वह पहले खिलाड़ी बन गए हैं। वहीं, महिला कैटेगरी में स्कॉटलैंड की कप्तान कैथरीन ब्रीस ने अवॉर्ड जीतकर कारनामा कर दिया है।
- नामित थे 5 देशों के 6 खिलाड़ी
- अंतर्राष्ट्रीय किक्रेट परिषद् (ICC) हर माह उम्दा प्रदर्शन करने वाले एक पुरुष और एक महिला

खिलाड़ी को प्लेयर ऑफ द मंथ अवॉर्ड से सम्मानित करता है। मई माह के लिए दोनों कैटेगरी में कुल 6 प्लेयर्स को नामांकन मिला था। इनमें पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, स्कॉटलैंड और आयरलैंड के प्लेयर्स जगह दी गई थीं।

- महिला कैटेगरी में पहली बार आयरलैंड और स्कॉटलैंड की प्लेयर्स को नामांकन मिला है। स्कॉटलैंड की कप्तान और स्टार गेंदबाज कैथरीन ब्रीस पहली बार नॉमिनेट हुई थीं। कैथरीन ब्रीस प्रतिद्विंदी आयरलैंड की स्पिनर गैबी लेविस और लेह पॉल पर भारी पड़ीं और मई माह का प्लेयर ऑफ द मंथ अवॉर्ड अपने नाम कर लिया है।

2. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में  
खोजा गया कॉफी परिवार के जीनस से  
संबंधित 15 मीटर का पेड़



- हाल ही में पाइरोस्ट्रिया लालजी (*Pyrostria laljii*) नामक खोजी गई नई प्रजाति का संबंध कॉफी से है। कॉफी परिवार के जीनस से संबंधित 15 मीटर ऊँचा पेड़ हाल ही में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह से भारत और फिलीपींस के शोधकर्ताओं की एक टीम द्वारा खोजा गया है। कॉफी की यह नई प्रजाति पाइरोस्ट्रिया लालजी, पायरोस्ट्रिया जीनस की प्रजाति है।
- इसे भारत में पहली बार रिकॉर्ड किया गया है। गौरतलब है कि जीनस पाइरोस्ट्रिया से संबंधित पौथे आमतौर पर मेडागास्कर में पाए जाते हैं। पाइरोस्ट्रिया लालजी को International Union for Conservation of Nature (IUCN) की रेड लिस्ट के तहत critically endangered (गंभीर रूप से संकटापन्न) श्रेणी में रखा गया है।
- **MACS 1407: सोयाबीन की कीट प्रतिरोधी किस्म**
- हाल ही में भारतीय वैज्ञानिकों ने सोयाबीन की अधिक उपज देने वाली और कीट प्रतिरोधी

किस्म विकसित की है जिसका नाम एमएसीएस 1407 (MACS 1407) है।

- एमएसीएस 1407' (MACS 1407) को 'एमएसीएस - अग्रहार रिसर्च इंस्टीट्यूट (ARI)' के वैज्ञानिकों ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) के सहयोग से विकसित किया है।
- वैज्ञानिकों ने पारंपरिक क्रॉस ब्रीडिंग तकनीक (conventional cross breeding technique) का उपयोग करके 'एमएसीएस 1407' को विकसित किया है।
- एमएसीएस 1407 नाम की यह नई किस्म भारत में सोयाबीन के उत्पादन को बढ़ाने में मदद करेगी। सोयाबीन की 'एमएसीएस 1407' किस्म कीट प्रतिरोधी भी है।
- यह गर्डल बीटल, लीफ माइनर, लीफ रोलर, स्टेम फ्लाई, एफिड्स, व्हाइट फ्लाई और डिफोलिएटर जैसे प्रमुख कीट-पतंगों का प्रतिरोधी है। इसका तना मोटा है तथा इसमें फली के बिखरने का जोखिम भी कम है। ये गुण इसे यांत्रिक कटाई के लिए भी उपयुक्त बनाते हैं।
- एमएसीएस 1407 नाम की यह नई विकसित किस्म असम, पश्चिम बंगाल, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और पूर्वोत्तर राज्यों में खेती के लिए उपयुक्त है और इसके बीज वर्ष 2022 के खरीफ के मौसम के दौरान किसानों को बुवाई के लिए उपलब्ध कराये जायेंगे।

### 3. बेल्जियम में किया गया नाटो शिखर सम्मेलन 2021 का आयोजन

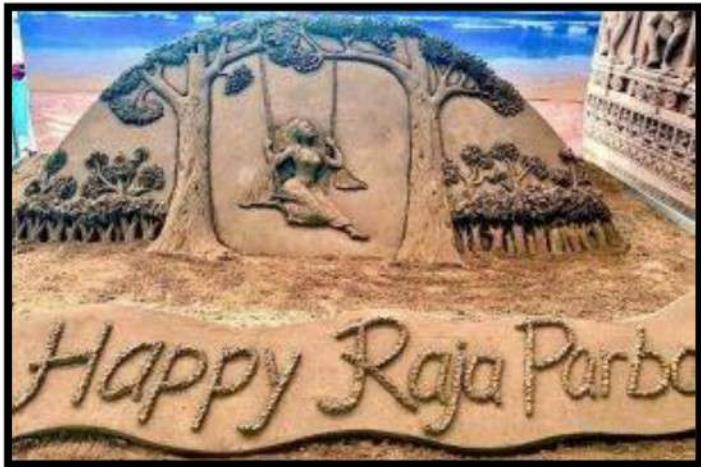


- 14 जून, 2021 को नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) के शासनाध्यक्षों की 31वीं औपचारिक बैठक ब्रुसेल्स, बेल्जियम में आयोजित की गई है। नाटो नेताओं ने प्रमुख मुद्दों पर चर्चा की, नाटो के भविष्य के बारे में निर्णय लिए और नाटो 2030 एजेंडा के अनुसार नाटो को अनुकूलित करने के लिए ठोस उपायों पर सहमति व्यक्त की। चर्चा के विषयों में भू-रणनीतिक वातावरण, उभरती प्रौद्योगिकियों, सामूहिक रक्षा, जलवायु परिवर्तन और सुरक्षा को बदलने में नाटो की भूमिका शामिल है।
- इसके अलावा अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने 14 जून को रूस और चीन को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा है कि इन दोनों देशों से निपटने के लिए नाटो देशों के सामने नई चुनौतियां हैं।
- **उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो)**
- नाटो की स्थापना 4 अप्रैल, 1949 को संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और कई पश्चिम यूरोपीय देशों द्वारा सोवियत संघ के विरुद्ध सोवियत प्रतिक्रिया के रूप में देखा था।

सामूहिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से एक सैन्य संगठन के रूप में (जिसे वाशिंगटन संधि भी कहा जाता है) की गई थी।

- इसका मुख्यालय ब्रुसेल्स, बेल्जियम में है। इस संगठन में 30 मार्च, 2021 तक कुल 30 सदस्य देश शामिल हैं, उत्तरी मैसेडोनिया (वर्ष 2020) इस संगठन में शामिल होने वाला सबसे नवीनतम सदस्य है। मूल रूप से नाटो में 12 सदस्य थे।
- संधि के एक प्रमुख प्रावधान (तथाकथित अनुच्छेद 5) में कहा गया है कि यदि यूरोप या उत्तरी अमेरिका में संगठन के किसी सदस्य पर हमला किया जाता है, तो इसे सभी सदस्यों पर हमला माना जाएगा। इसने प्रभावी रूप से पश्चिमी यूरोप को अमेरिका के "परमाणु छत्र" के तहत रखा है।
- नाटो ने केवल 12 सितंबर, 2001 को अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर 9/11 के हमलों के बाद अनुच्छेद 5 को एक बार लागू किया था। नाटो का संरक्षण सदस्य देशों के गृह युद्ध या आंतरिक तख्तापलट तक नहीं है।
- **वारसा संधि (Warsaw Pact)**
- नाटो में पश्चिम जर्मनी के शामिल होने के तुरंत बाद ही सोवियत संघ और उसके आश्रित राज्यों के बीच वारसा संधि (The Warsaw Pact, 1955) पर हस्ताक्षर किए गए। यह एक पारस्परिक रक्षा समझौता था जिसे पश्चिमी देशों ने पश्चिमी जर्मनी की नाटो सदस्यता के विरुद्ध सोवियत प्रतिक्रिया के रूप में देखा था।

#### 4. ओडिशा में शुरू हुआ राजा परबा उत्सव



- 14 जून, 2021 को ओडिशा में राजा परबा उत्सव की शुरूआत हुई है। यह 3 दिवसीय उत्सव है जो नारीत्व का जश्न मनाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार जब सूर्य वृषभ राशि से निकलकर मिथुन राशि में प्रवेश करता है तो उस दिन से वर्षा ऋतु का आगमन माना जाता है। इसे मिथुन संक्रान्ति के रूप मनाया जाता है और ओडिशा में इसे रज पर्व के नाम से मनाया जाता है जो मुख्यतः धरती माँ और व्यापक स्तर पर स्त्रीत्व को समर्पित उत्सव है।
- उडिया भाषा में रज शब्द का अर्थ है- मासिक धर्म। माना जाता है कि पृथ्वी भगवान जगन्नाथ की पत्नी है और धरती माता इस अवधि के दौरान तीन दिन के मासिक धर्म पर होती हैं। इसलिए इस पर्व पर पृथ्वी को नुकसान पहुँचाने वाली कोई भी गतिविधि जैसे- खेत की जुताई, टाइलिंग, निर्माण या कोई अन्य कार्य नहीं किया जाता है।
- पृथ्वी के मासिक धर्म चक्र के तीन दिवसीय रज-पर्व के पहले दिन को पहिली रज, दूसरे दिन को मिथुन संक्रान्ति और तीसरे दिन को बासी-रज

कहा जाता है। बसुमती स्नान के साथ इस पर्व का समापन होता है जिसका अर्थ होता है- पृथ्वी माता का स्नान।

- इस दिन संध्याकाल में लोग धरती माता की प्रतिकृति के रूप में पत्थर के टुकड़ों को स्नान कराकर पूजा करते हैं और एक समृद्ध कृषि वर्ष हेतु प्रार्थना करते हैं। रज पर्व में धरती माता के मासिक धर्म को उत्सव की तरह मनाने की यह परंपरा इस तथ्य की स्वीकारोक्ति है कि अतीत में भी महिलाओं के मासिक धर्म को लेकर समाज में कोई वर्जना नहीं थी और मासिक धर्म को प्रजनन क्षमता का प्रतीक मानकर स्त्रीत्व को दूसरे जीवन को जन्म देने की शक्ति माना जाता था। इसके अतिरिक्त यह पर्व स्त्री मुक्ति, मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता और लैंगिक न्याय के सतत् विकास लक्ष्य के अनुरूप है।

#### 5. टोक्यो पैरालिंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली भारतीय ताइक्वांडो एथलीट बनी अरुणा तंवर



- हाल ही में टोक्यो पैरालिंपिक (Tokyo Olympics) में ताइक्वांडो खिलाड़ी अरुणा तंवर (Aruna Tanwar) ने क्वालीफाई कर

लिया है। टोक्यो ओलिंपिक या पैरालिंपिक के लिए कोई भी भारतीय ताइक्वांडो खिलाड़ी बवालिफाई नहीं कर पाया है। अरुणा को टोक्यो पैरालिंपिक में वाइल्ड कार्ड के जरिए प्रवेश मिलने जा रहा है जिससे वह इसमें भाग लेने वाली पहली भारतीय ताइक्वांडो खिलाड़ी बन जाएगी। टोक्यो पैरालिंपिक 24 अगस्त से 05 सितंबर, 2021 तक खेले जाएंगे।

- भारतीय ताइक्वांडो के अध्यक्ष नामदेव शिरगांवकर ने कहा कि अरुणा को उनके शानदार प्रदर्शन के कारण वाइल्ड कार्ड मिला है। उन्होंने कहा कि वह पैरालिंपिक के लिये बवालिफाई करने वाली भारत की पहली ताइक्वांडो खिलाड़ी बनी है।
- भिवानी (हरियाणा) जिले की रहने वाली अरुणा के जन्म के समय से ही उनके हाथ और हाथ की उंगलियां बहुत छोटी थीं लेकिन अरुणा ने खुद कभी असहाय नहीं माना बल्कि जांबाज माना। उनके पिता प्राइवेट बस के ड्राइवर हैं। उनका सपना था कि बेटी खेल की दुनिया में देश का नाम रोशन करे।
- अरुणा इस समय महिलाओं की अंडर 49 श्रेणी (वेट कैटेगिरी) में दुनिया की चौथे नंबर की खिलाड़ी है। पाँच बार की राष्ट्रीय चैम्पियन अरुणा पिछले चार साल में एशियाई पैरा ताइक्वांडो चैम्पियनशिप और विश्व पैरा ताइक्वांडो चैम्पियनशिप में पदक जीत चुकी है।

## 6. जुलाई में होगा अमर्त्य कुमार सेन की पुस्तक 'होम इन द वर्ल्ड' का प्रकाशन

**Home in the World**  
A Memoir

WINNER OF THE Nobel Prize  
**Amartya Sen**

- हाल ही में भारतीय अर्थशास्त्री और नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य कुमार सेन (Amartya Kumar Sen) ने अपना संस्मरण 'होम इन द वर्ल्ड' (Home in the World) लिखा है। इस पुस्तक का प्रकाशन जुलाई, 2021 में पेंगुइन रैंडम हाउस द्वारा किया जाएगा। इस पुस्तक में उन्होंने अपने जीवन का विवरण साझा किया है।
- 'होम इन द वर्ल्ड' पुस्तक में सेन अपने बचपन के समय जब वह ढाका (बांग्लादेश) में थे उस समय से लेकर शांतिनिकेतन में अपने दादा-

दादी और माता-पिता द्वारा पालने-पोसने तक, कलकत्ता में पहली बार अर्थशास्त्र का अध्ययन करने तक, ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज में जाने तक और कैसे रवींद्रनाथ टैगोर ने उन्हें अपना नाम अमर्त्य दिया था इन सब घटनाओं का उल्लेख किया गया है।

- **अमर्त्य कुमार सेन (Amartya Kumar Sen)**
  - वह एक भारतीय अर्थशास्त्री और दार्शनिक हैं। इनका जन्म वर्ष 1933 में कोलकाता में हुआ था। उन्होंने वर्ष 1972 से यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका में पढ़ाया और काम किया है। उन्होंने कल्याणकारी अर्थशास्त्र, आर्थिक और सामाजिक न्याय, अकाल के आर्थिक सिद्धांत, विकास अर्थशास्त्र, निर्णय सिद्धांत, सार्वजनिक स्वास्थ्य आदि में योगदान दिया है। वर्तमान में वह थॉमस डब्ल्यू लैमोंट विश्वविद्यालय (Thomas W. Lamont University) में प्रोफेसर और हार्वर्ड विश्वविद्यालय (Harvard University) में अर्थशास्त्र और दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर हैं।
  - वर्ष 1998 में उन्हें कल्याणकारी अर्थशास्त्र की श्रेणी में नोबेल पुरस्कार दिया गया था। वर्ष 1999 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। German Book Trade का वर्ष 2020 शांति पुरस्कार उन्हें जर्मन पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स एसोसिएशन द्वारा प्रदान किया गया था।

## 7. यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी लकड़ी से बना दुनिया का पहला उपग्रह करेगी लॉन्च



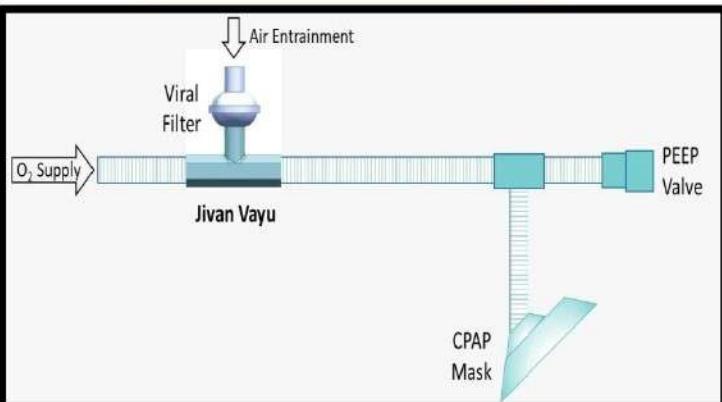
- हाल ही में यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) ने वर्ष 2021 के अंत तक लकड़ी से बना दुनिया का पहला उपग्रह 'विसा वुडसैट' (WISA Woodsat) को पृथ्वी की कक्षा में लॉन्च करने की घोषणा की है। इस उपग्रह को नवम्बर, 2021 तक लैब इलेक्ट्रॉन रॉकेट के साथ न्यूजीलैंड के माहिया पेनिनसुला लॉन्च कॉम्प्लेक्स से लॉन्च किया जाएगा।
- अंतरिक्ष यान संरचनाओं में प्लाईवुड जैसी लकड़ी की सामग्री के उपयोग का परीक्षण करने के लिए इसे लॉन्च किया जाएगा। यह मिशन लकड़ी की सामग्री को चरम अंतरिक्ष स्थितियों जैसे गर्मी, ठंड, वैक्यूम और विकिरण के संपर्क में लाएगा। इस सैटेलाइट को फिनलैंड में डिजाइन और निर्मित किया गया है।
- **उपग्रह की विशेषताएं**
  - यह उपग्रह ध्रुवीय सूर्य-समकालिक कक्षा (polar sun-synchronous orbit) में लगभग 500-600 किमी की ऊँचाई पर परिक्रमा करेगा। यह एक 10x10x10 सेमी नैनो उपग्रह है जिसे प्लाईवुड के मानकीकृत बक्से और सतह

पैनलों का उपयोग करके बनाया गया था जो आमतौर पर हार्डवेयर स्टोर में पाए जाते हैं और फर्नीचर बनाने के लिए उपयोग किए जाते हैं। लकड़ी से आने वाली वाष्प को कम करने और परमाणु ऑक्सीजन के क्षरणकारी प्रभावों से बचाने के लिए इसमें एल्यूमीनियम ऑक्साइड की पतली परत लगाई गई है।

- **जापान वर्ष 2023 तक लॉन्च करेगा लकड़ी से बना उपग्रह**
- दिसंबर, 2020 में जापान की सुमितोमो फॉरेस्ट्री कंपनी और क्योटो यूनिवर्सिटी ने अंतरिक्ष में कचरे की समस्या से निपटने के लिए वर्ष 2023 तक दुनिया का पहला लकड़ी से बना अंतरिक्ष उपग्रह लॉन्च करने की घोषणा की थी लेकिन यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) वर्ष 2021 के अंत तक यह कार्य सफलतापूर्वक कर लेती है तो यह रिकोर्ड उसके नाम दर्ज होगा।
- वर्तमान में जापान में यह प्रक्रिया अपने शुरुआती चरण में है क्योंकि अंतरिक्ष मिशन के लिए एक उपयुक्त साधन खोजने के लिए अनुसंधान टीम द्वारा कई लकड़ी सामग्री का परीक्षण किया जा रहा है। साथ ही टीम तापमान में बदलाव और धूप के प्रति बेहद प्रतिरोधी लकड़ी की सामग्रियों को विकसित करने की दिशा में भी काम कर रही है।
- यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) सांख्यिकीय मॉडल के अनुसार अंतरिक्ष में मानव द्वारा की गई गतिविधियों के कारण अवशेषों के 130 मिलियन से अधिक टुकड़े हैं जो हमारे ग्रह के चारों ओर एक मिलीमीटर से छोटे हैं। यह अवशेष अथवा मलबे के टुकड़े 22,300 मील प्रति घंटे से अधिक की गति से यात्रा कर सकता है, जो अन्य उपग्रहों को क्षति पहुँचा सकते हैं।

- **एनविज़न (EnVision) ऑर्बिटर**
- 10 जून, 2021 को यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (European Space Agency-ESA) ने शुक्र ग्रह (Venus) का अध्ययन करने के लिए 'एनविज़न' (EnVision) नामक अपनी प्रोब की घोषणा की है। एनविज़न (EnVision) शुक्र ग्रह के ऊपर चक्कर लगाने वाला अगला ऑर्बिटर होगा। इस मिशन का उद्देश्य शुक्र ग्रह के वायुमंडल और सतह का अध्ययन करना है तथा यह पता लगाएगा कि कैसे और क्यों शुक्र और पृथ्वी इतने अलग-अलग विकसित हुए।
- इसे वर्ष 2030 के दशक में लॉन्च किए जाने की संभावना है। यह मिशन एरियन 6 रॉकेट से लॉन्च किया जाएगा। अंतरिक्ष यान को शुक्र तक पहुंचाने में लगभग 15 महीने लगेंगे। यह एक ऑर्बिटर मिशन है।
- **यूरोपीय अंतरिक्ष संस्थान (EUROPEAN SPACE AGENCY-ESA)**
- यह 22 सदस्य देशों वाला एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जो यूरोप की अंतरिक्ष क्षमता के विकास को प्रदर्शित करता है। यह अपने सदस्यों के वित्तीय और बौद्धिक संसाधनों को समन्वित करता है। यह यूरोपीय देशों के बाहर भी अपने कार्यक्रम और गतिविधियों को संचालित करता है।
- ESA का मुख्यालय पेरिस में स्थित है। इसकी स्थापना वर्ष 1975 में हुई थी। ESA का अंतरिक्ष पत्तन (SPACE PORT) दक्षिण अमेरिका के फ्रेंच गुयाना में स्थित है।

## 8. IIT रोपड़ ने देश का पहला विद्युत मुक्त CPAP उपकरण 'जीवन वायु' किया विकसित



- हाल ही में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) रोपड़ ने एक उपकरण 'जीवन वायु' विकसित किया है जिसे सीपीएपी मशीन के विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह देश का पहला ऐसा उपकरण है जो बिना बिजली के भी काम करता है और अस्पतालों में ऑक्सीजन सिलेंडर व ऑक्सीजन पाइपलाइन जैसी दोनों प्रकार की ऑक्सीजन उत्पादन इकाइयों के लिए अनुकूलित है। ये प्रावधान अन्य मौजूदा निरंतर सकारात्मक वायुमार्ग दबाव (Continuous Positive Airway Pressure-CPAP) मशीनों में उपलब्ध नहीं हैं।

### जीवन वायु (Jivan Vayu)

- यह उपकरण बिना बिजली के भी काम करता है। यह अस्पतालों में दोनों प्रकार की ऑक्सीजन उत्पादन इकाइयों, O<sub>2</sub> सिलेंडर और ऑक्सीजन पाइपलाइनों के लिए अनुकूलित है।
- चिकित्सकीय रूप से आवश्यक सभी मापदंडों को पूरा करने के अलावा, यह उपकरण लीक-

प्रूफ है और कम लागत वाला है। इसे 22mm CPAP क्लोज्ड-सर्किट ट्यूब के लिए डिजाइन किया गया है। इस डिवाइस को ट्यूब के आकार के अनुसार भी अनुकूलित किया जा सकता है।

- चूंकि यह डिवाइस बिजली के बिना भी चलता है, इसका उपयोग रोगी को सुरक्षित रूप से परिवहन के लिए किया जा सकता है।
- यह डिवाइस उच्च प्रवाह ऑक्सीजन (20-60 LPM) वितरित कर सकता है और 20 सेमी H<sub>2</sub>O तक निरंतर सकारात्मक दबाव बनाए रख सकता है।
- इसे 40 %से अधिक के FiO<sub>2</sub> और 5-20 सेमी H<sub>2</sub>O के PEEP (positive end-expiratory pressure) को बनाए रखने के लिए डिजाइन किया गया है।
- कोविड -19 महामारी के बीच इस उपकरण की समय की आवश्यकता थी जब बिजली की आपूर्ति उन लोगों के जीवन को बचाने के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय है जो वेंटिलेटर और ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर जैसे चिकित्सा उपकरणों पर हैं।
- निरंतर सकारात्मक वायुमार्ग दबाव (CPAP) मशीन**
- निरंतर सकारात्मक वायुमार्ग दबाव (CPAP) नींद के दौरान सांस लेने में समस्या, जिसे नींद स्वास अवरोध (स्लीप एपनिया) कहा जाता है, वाले मरीजों के लिए एक उपचार पद्धति है। यह मशीन आसान सांस लेने को लेकर हवा के रास्ते को खुला रखने के लिए हल्के वायु दब वाले उपकरण के लिए एक उपकरण है।
- इसका उपयोग उन नवजातों के इलाज के लिए भी किया जाता है जिनके फेफड़े पूरी तरह से विकसित नहीं हुए हैं। यह मशीन बच्चे के फेफड़ों को फुलाने में मदद करने के लिए उसके

या उसकी नाक में हवा भरती है। कोविड-19 संक्रमण के शुरुआती चरणों के दौरान यह उपचार सबसे अधिक जरूरी है। यह फेफड़ों के नुकसान को कम करती है और मरीजों को दुष्प्रभाव से उबरने में सहायता करती है।

## 9. लैंगिक समानता के मामले में छत्तीसगढ़ का सबसे शानदार प्रदर्शन



- नीति आयोग की एसडीजी इंडिया सूचकांक रिपोर्ट 2020-21 में सतत विकास लक्ष्य (SDG) के लैंगिक समानता के मामले में छत्तीसगढ़ को भारत में सबसे शानदार प्रदर्शन करने वाला राज्य घोषित किया गया है। केरल ने नीति आयोग के एसडीजी इंडिया सूचकांक 2020-21 में शीर्ष स्थान पर अपना कब्जा कायम रखा है, जबकि बिहार सबसे निचले पायदान पर है।
- यह सूचकांक 'यूनाइटेड नेशंस इन इंडिया' के सहयोग से तैयार किया गया है। इसमें राष्ट्रीय और उप-राष्ट्रीय स्तर पर प्रगति मापी गई है। सूचकांक में राष्ट्रीय सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय के राष्ट्रीय संकेतक ढांचा (NIF) से जुड़े 115 संकेतकों पर सभी राज्यों

एवं केंद्र शासित प्रदेशों की प्रगति का मूल्यांकन किया गया।

- गौरतलब है कि पिछले साल छत्तीसगढ़ ने लैंगिक गुणवत्ता मानदंड में 43 अंक हासिल किया था और वह भारत में सातवें स्थान पर रहा था। इस साल इसने 61 अंक हासिल किए और सूचकांक में शीर्ष पायदान पर पहुंच गया। छत्तीसगढ़ ने जिन अन्य एसडीजी मानदंडों में शीर्ष-10 में जगह बनाई है, वे हैं स्वच्छ जल और स्वच्छता, शानदार कार्य एवं आर्थिक वृद्धि तथा असमानता का घटना शामिल है।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि छत्तीसगढ़ की रैंकिंग में सुधार जन्म के समय संतुलित लिंगानुपात, विगत वर्षों में समान लैंगिक भुगतान में सुधार, महिलाओं के खिलाफ अपराध दर में कमी, घरेलू हिंसा की घटनाओं में कमी सहित अन्य कारणों के चलते देखा गया है। एसडीजी सूचकांक राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों का सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय मानदंडों पर मूल्यांकन करता है।
- सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goal-SDG)**
- वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) में सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने विकास के 17 लक्ष्यों को आम सहमति से स्वीकार किया। UN ने विश्व के बेहतर भविष्य के लिये इन लक्ष्यों को महत्वपूर्ण बताया तथा वर्ष 2030 तक इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये इसके क्रिन्वयन की रूपरेखा सदस्य देशों के साथ साझा की।
- नीति आयोग**
- 1 जनवरी, 2015 को योजना आयोग के स्थान पर केंद्रीय मंत्रिमंडल के एक संकल्प पर नीति आयोग का गठन किया गया। इसमें सहकारी

संघवाद की भावना को केंद्र में रखते हुए अधिकतम शासन, न्यूनतम सरकार के दृष्टिकोण की परिकल्पना को स्थान दिया गया।

- नीतिआयोग का अध्यक्ष- पदेन प्रधानमंत्री
- उपाध्यक्ष- प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त व्यक्ति
- संचालन परिषद-सभी राज्यों के मुख्यमंत्री और केंद्रशासित प्रदेशों के उपराज्यपाल।
- पदेन सदस्यता- प्रधानमंत्री द्वारा नामित केंद्रीय मंत्रिपरिषद के अधिकतम चार सदस्य।
- मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO)- भारत सरकार का सचिव जिसे प्रधानमंत्री द्वारा एक निश्चित कार्यकाल के लिए नियुक्त किया जाता है।
- विशेष आमंत्रित- प्रधानमंत्री द्वारा नामित विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ।
- नीति आयोग के मुख्य तथ्य
- नीति आयोग के प्रथम अध्यक्ष- नरेन्द्र मोदी
- नीति आयोग के प्रथम उपाध्यक्ष- अरविन्द पनगड़िया
- नीति आयोग के प्रथम मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO)- सिन्धु श्री खुल्लर

## 10. तेलंगाना में ड्रोन के जरिए होगी वैक्सीन और मेडिकल सामानों की डिलीवरी



- हाल ही में ई-कॉर्मर्स कंपनी फ्लिपकार्ट ने मेडिसिन्स फ्रॉम द स्काई (Medicines from the Sky) प्रोजेक्ट का नेतृत्व करने के लिए तेलंगाना सरकार के साथ साझेदारी की है। इस परियोजना के तहत दूरस्थ क्षेत्रों (remote areas) में चिकित्सा आपूर्ति की ड्रोन डिलीवरी के विकास और कार्यान्वयन का काम सौंपा गया है। मेडिसिन्स फ्रॉम द स्काई के जरिए तेलंगाना पहला राज्य बन गया है जो ड्रोन फ्लाइट्स के जरिए वैक्सीन और एसेंशियल्स की डिलीवरी करेगा।
- इस कंसोर्टियम के तहत वॉलमार्ट के स्वामित्व वाली फ्लिपकार्ट ड्रोन तैनात करेगी और टीकों व चिकित्सा आपूर्ति की डिलीवरी को सक्षम करेगी। इस सामान की ड्रोन डिलीवरी के लिए जियो मैपिंग, लोकेशन ट्रैसिंग और शिपमेंट की रूटिंग जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाएगा।
- भारत भर में लाखों ग्राहकों की सेवा करने के लिए फ्लिपकार्ट द्वारा वर्षों से इन तकनीकों का विकास किया जा रहा है। इन तकनीकों का